प्रवासी राजस्थानी परिवार के बच्चों को राजस्थान की कला-संस्कृति से जोड़ने का फाउंडेशन का प्रयास रंग लाया

राजस्थानी बच्चों से जोड़ा नाता

नई पीढ़ी को अपनी कला-संस्कृति से जोड़ने के लिए यह बहुत जरूरी है कि हम अपने बच्चों के मन में राजस्थान की संस्कृति के प्रति दिलचस्पी पैदा करें। जिससे हमारी इस अमूल्य विरासत को नष्ट होने से बचाया जा सकता है। नई पीढ़ी के हाथों में हमारी यह कला संस्कृति और धरोहर पूरी तरह सुरक्षित रहे, इस दिशा में हमारे प्रयास हैं।

लोक कथा 'चल मेरी ढोलकी धमाक-धम'

राजस्थान फाउंडेशन ने प्रवासी राजस्थानी परिवारों के बच्चों के लिए एक ऑनलाइन रोचक कार्यक्रम का आयोजन किया। इस ऑनलाइन कार्यक्रम में सीमा मूंदड़ा जो कि यूएसए की राजस्थानी प्रवासी है, द्वारा प्रसिद्ध लोक कथा 'चल मेरी ढोलकी धमाक-धम' सुनाई गई। उन्होंने राजस्थानी बच्चे 'झिंटिया' की कहानी को भी बड़े रोचक ढंग से सुनाया। राजस्थान फाउंडेशन का प्रवासी बच्चों को राजस्थान की कला-संस्कृति से जोड़ने का अनूठा प्रयास 'चल मेरी ढोलकी धमाक धम' रहा। राजस्थान की लोक कथाएं देश-विदेश में बहुत ही प्रसिद्ध हैं, उन्ही में से एक लोककथा बच्चों को सुनाई गई। इस कार्यक्रम में प्रवासी राजस्थानी परिवारों के करीब 150 बच्चे ऑनलाइन रूप से जुडे और हजारों लोगों ने फेसबुक आदि पर इसे लाईव देखा। प्रवासी बच्चों ने बहुत उल्लास के साथ इस कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम में ऑस्ट्रेलिया, दुबई, रंगून, यूनाइटेड किंगडम और अमेरिका आदि देशों के प्रवासी बच्चों ने भाग लिया।

सीमा मूंदड़ा बच्चों को अपनी कहानी सुनाते हुए

देथा और कोठारी ने बच्चों को दी रोचक जानकारियां

इस कार्यक्रम में कैलाश कबीर देथा और कुलदीप कोठारी ने भी भाग लिया।

सुप्रसिद्ध लेखक व पद्मश्री स्व. विजयदान देथा के पुत्र श्री कैलाश कबीर देथा ने ऑनलाइन कार्यक्रम में बताया कि उनके पिता ने राजस्थानी लोक कथाओं को संकलित किया था। रवींद्रनाथ टैगोर के बाद बिज्जी ही भारतीय उपमहाद्वीप के एकमात्र ऐसे लेखक हैं, जिनका नाम 2011 में साहित्य के नोबेल पुरस्कार के लिए नामित हुआ था। वहीं पद्म भूषण स्व. श्री कोमल कोठारी के पुत्र श्री कुलदीप कोठारी ने बताया कि अरना-झरना मरुस्थल संग्रहालय में राजस्थान के जनजीवन, पर्यावरण एवं प्रदर्शनकारी कलाओं की स्थायी एवं अस्थायी झांकियां संजोई गई है।

पतंगों में भर दिए मासूमियत के रंग

पतंग बनाओ, संक्रांत मनाओ : संक्रांत के अवसर पर बच्चों ने भेजी अपनी रचनात्मक पतंगें

रणवीर शर्मा, लंदन से अपनी पतंग के साथ

सरला मोहंता और उनकी पोती अहाना मोहंता राउरकेला, उड़ीसा

सीमा मूंदड़ा, यूएसए

विनिता लड्ढा, पुणे

प्रवासी बच्चों से बोला गया कि राजस्थान के रंग अपने मन से कागज में भर दो। प्रतिभावान बच्चों ने अपनी चित्रकारी भेजी। शगुन पुरोहित की कलात्मक चित्रकारी को राजस्थान फाउंडेशन ने अपने न्यू ईयर ग्रीटिंग कार्ड में उतारा।

फाउंडेशन ने न्यू ईयर ग्रीटिंग पर उकेरी बच्चों की कलाकारी